प्रभा खेतान के उपन्यासों में पारिवारिक, आर्थिक एवं धार्मिक समस्याओं का विवेचन

–अर्चना श्रीवास्तव
शोधछात्रा–लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दीनदयाल उपाध्याय नगर (उ.प्र.)

सारांश

प्रभा खेतान ने पारिवारिक समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया है कि नारी का जीवन परिवार में यातनाओं से पूर्ण होते हुए भी वह निःशब्द समस्या युक्त जीवन को जीती रहती है। पारिवारिक समस्याओं के कारण बहुत सी स्त्रियाँ आत्महत्या तक कर लेती हैं और बहुत सारी स्त्रियाँ इन अत्याचारों को निःशब्द होकर सहती रहती हैं। प्रभा खेतान का मानना है कि आर्थिक रूप से समृद्ध बनकर ही स्त्री अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर सकती है। इस सत्य को उन्होंने अपने कई उपन्यासों में व्यक्त किया है। धर्म की आड़ में स्त्रियों के हो रहे शोषण को प्रभा खेतान ने अपने साहित्य में बखूबी प्रस्तुत किया है। उन्होंने मारवाड़ी समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों को प्रस्तुत किया है।

शब्द–संकेत– निःशब्द, अत्याचार, स्वतन्त्रता, पारिवारिक समस्या, अन्धविश्वास, आर्थिकाभाव, शोषण, दूसरी स्त्री।

व्यक्ति की सामाजिक क्रियाएँ 'परिवार' नामक संस्था से ही प्रारम्भ होती है। व्यक्ति के व्यवहारों का संचालक परिवार ही है। परिवार व्यवस्था ऐसी व्यवस्था है जिसके सदस्य परस्पर स्नेह व सेवाभाव से रहते हैं। संयुक्त, विभक्त एवं एकल परिवार तीन प्रकार के परिवार मिलते हैं। स्वतन्त्र्योत्तर काल में आर्थिक विषमताओं के कारण संयुक्त परिवार में विघटन की समस्या ने जन्म लिया। आर्थिकाभाव, संतानाभाव एवं दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे के प्रति समर्पणाभाव के कारण पारिवारिक समस्याओं ने जन्म लिया। पति या पत्नी के व्यभिचारी होने एवं पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था के कारण भी पारिवारिक समस्याएँ अस्तित्व में आती हैं। प्रभा खेतान ने पारिवारिक समस्याओं का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है।

टूटते–बिखरते स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों की समस्या– स्त्री–पुरुष अर्थात् पति–पत्नी के सम्बन्धों को भारतीय समाज में बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। परन्तु यदि किन्हीं कारणों से यदि उनमें दरार पड़ जाती है तो पुरुष के वनिस्पत् स्त्रियों को उसके ज्यादा भयंकर परिणाम सहने पड़ते हैं। ऐसी घटनाओं का वर्णन प्रभा खेतान ने अपने कई उपन्यासों में किया है। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास में नारी–पात्र मरील और उसके पति में उत्पन्न अहम भाव के कारण ही उनके सम्बन्धों में बिखरन उत्पन्न होती है। पति–पत्नी के इस समस्या के गिरफ्त में उनकी दो बेटियाँ भी आती है। उनको माँ का प्यार नहीं मिल पाता है। मिसेज बेरी के परिवार में भी माँ के बदले की भावना के कारण पति–पत्नी के सम्बन्धों में समस्या निर्मित होती है। मिसेज बेरी का मानना था कि उसके पति ने उस पर दया करके उसे अपनाया है तथा उसे बेसहारा समझकर सहारा दिया है। इस प्रसंग में मिसेज बेरी की बदले की जिद के कारण उनकी बेटियों को भयंकर दुःख का सामना करना पड़ता है।

'तालाबन्दी' उपन्यास में पति की उद्योगशीलता एवं व्यावसायिक वृत्ति के कारण पत्नी परिवार में चैन से नहीं रह पाती। सुमित्रा का जीवन पति के व्यवसाय के कारण सुखी एवं

सन्तुष्ट नहीं बन पाता, लेकिन उसके पति उनका कहना नहीं मानते इसलिए परिवार में तनाव व्याप्त रहता है। प्रभा खेतान के 'अग्निसम्भवा' उपन्यास की नारी–पात्र आइवी अपने पति के उत्पीड़न से त्रस्त होकर चीन छोड़कर हाँगकाँग चली जाती है। समाज की स्त्रियाँ हमेशा से पतियों के शोषण का शिकार रही हैं। प्रभा खेतान ने शोषित स्त्रियों की असहनीय जिन्दगी के दर्द को आइवी के कथन के माध्यम से प्रस्तुत किया है– ''ये साले चीनी पति होते ही हरामी हैं, एक वह मेरा पति था... दिनरात लाल किताब लिये विश्व क्रान्ति की बातें करता रहता। ...आये दिन शराब के नशे में मुझे पीटता था। मैं दिनभर खेत में खटती रहती। थोड़े पैसे और मिल जायें इसके लिए रात को जाग–जागकर कपड़े सिलती रहती।''[1]

'छिन्नमस्ता' की प्रिया को बचपन से ही परिवार में भेद–भाव के कारण बहुत सारी पारिवारिक समस्याओं से रू–ब–रू होना पड़ता है। विवाह के पश्चात् भी उसकी समस्याएँ लगी रहती हैं जिसके कारण वह पारिवारिक जीवन से ऊब जाती है और पति अलग हो जाती है। अपने पति से प्रिया कहती है– ''मुझे दो महीने का वक्त दो, मैं तुम्हारा आफिस, घर, तुम्हारे दिये हुए गहने–कपड़े, हाँ, और संजू को भी, सब छोड़ दूँगी, सब।''[2]

इस तरह पति–पत्नी में उत्पन्न हुए अहंभाव, पति के उत्पीड़न–अत्याचार, नारी के स्वतन्त्र होने की इच्छा, स्त्री एकान्त जैसे कई मुद्दों को प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है।

विवाहेतर सम्बन्धों की समस्या– प्रभा खेतान ने अपने कई उपन्यासों में वर्णन किया है कि जब पति का अन्य स्त्री के साथ प्रेम सम्बन्ध जुड़ता है तो उस पत्नी का उलझनों में उलझता जाता है। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास की नारी पात्रों को पति के अन्य स्त्री के साथ सम्बन्धों के कारण बहुत कुछ सहना पड़ता है। एलिजा को अपने पति के विवाहेत्तर सम्बन्ध के कारण पारिवारिक समस्याओं का सामाना करना पड़ता हैं एलिजा के पति का सम्बन्ध दूसरी स्त्री क्लारा ब्राउन से है जो उसके प्रेम सम्बन्ध में बँध जाता है और दोनों का पारिवारिक जीवन कलह एवं दुःखों से भर जाता है। अन्ततः उनका पारिवारिक जीवन टूटकर बिखर जाता है।

'एड्स' उपन्यास में प्रभा खेतान ने पत्नी और उसके दोस्त की बेवफाई के कारण उत्पन्न एड्स जैसी बीमारी से ग्रस्त लाचार पति की पीड़ा और शर्मिन्दगी को बड़ी बखूबी को चित्रित किया है। पति को यह डर है कि यह खतरनाक बीमारी कहीं किसी और को न लग जाए जिसके कारण वह अन्य किसी स्त्री को नहीं अपना सकता। प्रभा खेतान ने यह बताने का प्रयास किया है कि एक सफल दाम्पत्य जीवन के अन्त का मुख्य कारण विवाहेतर अन्य स्त्री से सम्बन्ध होता है।

'छिन्नमस्ता' उपन्यास का नरेन्द्र अपनी सेक्रेटरी से सम्बन्ध रखता है, नरेन्द्र के पिता मि. अग्रवाल का तिलोत्तमा से सम्बन्ध, अपने–अपने चेहरे उपन्यास में मिस्टर गोयनका का सम्बन्ध रमा से, कुणाल का नीना से सम्बन्ध; पीला आँधी उपन्यास में सोमा का सुजीत से सम्बन्ध तथा 'स्त्री पक्ष' उपन्यास में सुमित का सुनीता से सम्बन्ध ये सभी विवाहेतर सम्बन्धों के उदाहरण हैं। वस्तुतः प्रभा खेतान ने पति के विवाहेतर सम्बन्ध के कारण नारी के नारकीय जीवन का पर्दाफाश किया जो पाठकों को उस नारी–पात्र के साथ सहानुभूति के रूप में सम्बन्धित कर देता है।

प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री एवं गरीबों का शोषण अमीरों एवं पुरुषों द्वारा स्त्रियों के शोषण पर बखूबी प्रकाश डाला गया है। बाहर और घरेलू दोनों स्थितियों में स्त्री के श्रम का

आर्थिक शोषण होता है। प्रभा जी लिखती हैं– ''स्त्री श्रम द्वारा उत्पादन की दो प्रणालियाँ हैं। एक बाह्य जगत् में उत्पादन की तथा दूसरी गृहस्थी में जहाँ दिन–रात बिना किसी मूल्य के श्रम करती है, किन्तु श्रम के इस पक्ष का समाज आर्थिक मूल्यांकन नहीं करता, परिणामस्वरूप स्त्री–श्रम का शोषण होता है।''[3] आर्थिक रूप से हो रहे नारी शोषणों को प्रभा खेतान ने विविध पहलुओं के आधार पर वर्णित किया है।

नारी के आर्थिक सबलीकरण की समस्या– प्रभा खेतान ने स्त्रियों के लिए जीवन जीने की पहली शर्त को आर्थिक स्वतन्त्रता को माना है। उनका मानना है कि स्व–अस्तित्व को पहचानने के लिए स्त्री को आर्थिक रूप से पूरी तरह सबल होना होगा। वे लिखती हैं– ''अर्थ के अभाव में वह ज्यादा पराधीन हुई है। जब पुरुष ही कमाएगा, परिवार में निर्णय का अधिकार भी पुरुष को ही मिलेगा तो सत्ता और अधिक पुरुष के हाथों में केन्द्रित होगी।''[4]

प्रभा खेतान के उपन्यास 'आओ पेपे घर चलें' की प्रभा अपने बाबूजी के मृत्योपरान्त काफी आर्थिक समस्या से घिर जाती है। आर्थिक अभावग्रस्त प्रभा सोचती है कि आर्थिक स्वतन्त्रता उसकी पहली जरूरत है यही कारण है कि कलकत्ता वापस आकर हेल्थ क्लीनिक खोलकर वह अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाती है। मिसेज ड्युपाड प्रभा को 20 डालर से 20 मिलियन डॉलर कमाने की कला बताती है। विवेच्य उपन्यास के ज्यादातर स्त्री–पात्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। मरील अधिक डालर कमाने के उद्देश्य से फिल्मस्टार क्लारा ब्राउन और मिसेज डी के घर के वार्डरोब को मैनेज करती है। हेल्गा अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए अपना अलग अस्तित्व बनाने के लिए रेस्टोरेण्ट खोलती है। हेल्गा प्रभा से कहती है– ''बिना अपने पैरों पर खडे हुए तुम कोई भी लड़ाई नहीं लड़ सकती।''[5]

'छिन्नमस्ता' उपन्यास की प्रिया हमेशा से ही आर्थिक रूप से अभावग्रस्त थी। उसकी शादी करोड़पति परिवार में होती है फिर भी उस पर आर्थिक रूप से बंदिशें लगी रहती हैं। ऐसी स्थिति में वह अपना खुद का व्यवसाय प्रारम्भ करके आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करती है। उसने आत्मनिर्भरता के लिए अपने पति और बेटे को भी त्याग दिया। लेखिका ने प्रिया की माँ कस्तूरी के माध्यम से भी नारी के लिए आर्थिक महत्त्व को प्रकाशित किया है। कस्तूरी के पति के आकस्मिक मृत्यु होने पर वह हिम्मत नहीं हारती और आर्थिक स्वावलम्बन प्राप्त करने का प्रयास करती है।

'स्त्री पक्ष' उपन्यास की वृन्दा मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री है। उसके पति की आय कम है। इसलिए अपने पति का सहयोग करने के लिए वह एक डॉक्टर के यहाँ टाइपिस्ट की नौकरी करती है। ऐसा करके वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारना चाहती है।

उपर्युक्त प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि प्रभा खेतान की दृष्टि से यदि नारी आर्थिक रूप से सबल होगी तो वह किसी भी समस्या का समाधान कर सकती है। भारतीय समाज में स्त्री के लिए पैसा जीवन जीने का एक साधन मात्र है। मध्यम वर्गीय परिवार ज्यादा और शीघ्रता से पैदा कमाने के रास्ते में किसी प्रकार की रुकावट को बर्दाश्त सहन नहीं कर पाता। साथ ही वह खर्च करने की मर्यादा का भी ध्यान नहीं रख पाता, जिससे वक्त–जरूरत पर बचा पैसा उसके काम आए।

नारी के आर्थिक शोषण की समस्या– स्त्रियों के आर्थिक शोषण के मुद्दे पर प्रभा खेतान इसके लिए स्त्रियों को ही जिम्मेदार मानती हैं। वे हर स्त्री को आर्थिक रूप से सबल और स्वतन्त्र बनाना चाहती हैं। बचपनावस्था में आर्थिक तंगी में पली–बढ़ी प्रभा जी आर्थिक रूप से सम्पन्न समाज के निर्माण की हिमायती हैं। अमीर–गरीब का भेद मिटाकर नौकर और मालिक के मध्य मानवीय रिश्ता कायम हो ऐसे समाज के निर्माण की कल्पना करती हैं।

प्रभा खेतान जी 'तालाबन्दी' उपन्यास में एक भारतीय व्यक्ति तथा उसकी कम्पनी पर पाश्चात्य व्यापारी जो आर्थिक शोषण करते हैं, माल की क्वालिटी में कमी को दिखाकर क्लेम का दावा करते हैं जैसी समस्या पर प्रकाश डाला है। 'अग्निसम्भवा' की आइवी अपने देश के आर्थिक शोषण के लिए विदेशियों को जिम्मेदार ठहराती है। आइवी जब चीन के शेनजेन में अपने भाई के साथ भागकर आती है और एक फैक्ट्री में कमीज सिलने का काम करती है। प्रातः 8 बजे से रात 8 बजे तक 12 घण्टे कार्य करने पर उसे महीने में केवल चालीस–पचास डालर मिलते हैं। आइवी का भाई चमड़े की फैक्ट्री में काम करता है। उसके द्वारा ओवर टाईम काम करने पर भी उसकी मजदूरी के पैसे काट लिये जाते थे। आइवी के शब्दों में– ''आप इंग्लिश हो या डच हो या जर्मन, चमड़ी का रंग सफेद है और हर सफेद चमड़ी वाले का दिल काला होता है। आप लोगों ने हमारे देश का शोषण किया और अब रहम दिखा रहे हैं।''[6]

स्पष्ट है कि प्रभा जी ने देश के आर्थिक शोषण के लिए विदेशी लोगों को कहीं न कहीं जिम्मेदार मानती हैं। यदि कोई भारतीय विदेशी धरती पर कुछ करना, बनना चाहता है तो उसे विदेशियों के आर्थिक शोषण को कदम–कदम पर सहन करना पड़ता है।

महँगाई की समस्या और नारी– महँगाई समाज के लिए एक ऐसा अभिशाप है जो सामान्य व्यक्ति के जीवन को तहस–नहस कर देती है। गरीब लोगों को तो दो जून की रोटी जुटाना भी बड़ा मुश्किल का काम बन जाता है। उच्च वर्ग को महँगाई थोड़े–बहुत अंश में प्रभावित करती है। प्रभा जी के उपन्यास 'अपने–अपने चेहरे' का मिसेज गोयनका का परिवार उच्चवर्गीय परिवार की श्रेणी का है। मिसेज गोयनका बड़े परिवार के खर्चे के लिए अपने पति पर पूरी तरह से निर्भर रहती हैं। उनका परिवार उच्चवर्गीय और आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवार है फिर भी उनके घर में महँगाइ के कारण हमेशा अशान्ति बनी रहती है। मिसेज गोयनका जब अपने पति से घर खर्च के पैसे माँगती हैं वे गुस्सा करते हैं, क्योंकि उनके पति को लगता है कि उनकी पत्नी व्यर्थ के पैसे खर्च कर रही है। इस पर मिसेज गोयनका कहती हैं– ''घूम फिर कर आप एक ही बात पर क्यों आ जाते हैं? रुपया माँगते ही आपको बस बिजली का करेण्ट लगता है। पैसे–पैसे का तो हिसाब लिखती हूँ और जब आपके जी से खर्चा नहीं होता, तब लोगों को बुलाते क्यों हो?''[7]

पारिवारिक संघर्षों का मुख्य कारण महँगाई होती है। 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में इस सच्चाई को प्रभा खेतान उजागर करती हैं। प्रिया के बाबूजी की मृत्यु के बाद उसकी विधवा माँ को घर का खर्च चलाने के लिए बड़ी कठिनाई होती है। ऐसी विकट स्थिति में प्रिया का छोटा भाई जब अपने पिता के कमाये धन में से आधे हिस्से की माँग करता है तो इस आघात से प्रिया की माँ अस्वस्थ बन जाती है।

प्रभा खेतान का उपन्यास 'पीली आँधी' मारवाड़ी समाज के युवकों द्वारा आर्थिक समस्या के कारण घर छोड़कर जाने के प्रसंग को बखूबी चित्रित करता है। गरीबी, महँगाई, भुखमरी के

प्रकोप के कारण रूंगटा परिवार के दोनों बेटे कमाई के लिए दिसावर जाते हैं। इसी उपन्यास में प्रभा खेतान ने साल में दो बार बरसात न होने से किसानों के जीवन की दुर्दशा का वर्णन किया है।

उपर्युक्त प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि महँगाई के कारण परिवार में कलह, परिवार के युवकों को अपना घर–गाँव छोड़कर बाहर कमाने के लिए जाना, पति की अनुपस्थिति में विधवा स्त्री को घर चलाने की कठिनाईयों आदि का बखूबी वर्णन प्रभा खेतान ने किया है।

भारतीय समाज विभिन्न धर्मों को मानने वाला देश है। भारतीय हिन्दू समाज में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक प्रकार के धार्मिक संस्कारों होते हैं। हर भारतीय के भीतर धर्म के प्रति आस्था, निष्ठा एवं श्रद्धा का भाव मानव–मन समाया रहता है। प्रभा खेतान जी ने अपने उपन्यासों में अनेक धार्मिक कर्मकाण्ड जैसे– पूजा– पाठ, व्रत–उपवास, त्यौहार, अन्धविश्वास एवं मान्यताएँ आदि पर बखूबी प्रकाश डाला है। ये धार्मिक कर्मकाण्ड स्त्रियों के जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव डालते हैं और उनसे क्या–क्या समस्याएँ उत्पन्न होती हैं उसका चित्रण प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में किया है।

धार्मिक अन्धविश्वास से ग्रस्त नारी– जब किसी भारतीय के साथ कोई अनहोनी दुःखद घटना घटित हो जाती है तो वह उसे भगवान् का प्रकोप मानता है। इस तरह के प्रकोप से बचने के लिए वह अनेक तरह के उपाय करता है ऐसे उपायों को प्रभा खेतान ने अपने उपन्यासों मूं स्थान दिया है। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास में प्रभा अपने गले में सोने की चेन में हनुमानजी का लॉकेट पहनती है। उस लॉकेट को देखकर आइलिन कहती है कि क्या तुम्हारा भगवान् बन्दर है। 'तालाबन्दी' उपन्यास के श्यामबाबू अपने ऑफिस पहुँचकर सबसे पहले राणी सती और हनुमान जी के तस्वीरों के सामने प्रणाम करने के पश्चात् ही अपना काम शुरू करते हैं। यदि उनकी फैक्ट्री में किसी प्रकार की समस्या आती है तो उसे खत्म करने के लिए वे हनुमानजी के मन्दिर में जाकर प्रणाम करते हैं साथ ही ग्यारह रुपये हनुमानजी के चरणों में चढ़ाकर चरणामृत लेकर मन को शान्त करते हैं। श्यामबाबू संकटमोचन जाप करते हैं तत्पश्चात कहते हैं– ''आज यदि मेरा काम नहीं हुआ तो मैं ... हाँ मैं कभी तेरा नाम नहीं लूँगा।''[8]

प्रभा खेतान के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' की कस्तूरी देवी अपने बेटे की रोगिष्ठ बहू के कारण हुए नर्वस ब्रेकडाउन का आरोप ताई जी पर लगाती हैं। जो उनके मन की अन्धश्रद्धा को व्यक्त करता है। वे कहती हैं– ''ताई ने फेरों के वक्त उन पर जो रुपया वारा था, उसमें कुछ टोटका किया था।''[9] 'एड्स' उपन्यास में एण्ड्रू स्पेन्सर की पत्नी की एड्स की बीमारी की कथा सुनकर उसकी बिखरती जिन्दगी को प्रभा जी अपने साईं को याद करती है। 'छिन्नमस्ता' की कस्तूरी देवी अपने छोटे बेटे के घर से चले जाने पर उसकी ठीक–ठाक होने के लिए हनुमानजी को सवामन का दालचूर्मा का प्रसाद और राणी सती के चूड़ा–चूनड़ी का चढ़ावा मानती हैं।

'अपने–अपने चेहरे' उपन्यास की मिसेज गोयनका अपने पति को साठ साल की उम्र के बाद तीर्थ करने, भागवत–भजन एवं पूजापाठ करने की सलाह देती हैं तो 'पीली आँधी' की सुराणा जी की पत्नी जैन धर्म को मानने वाली होते हुए धनतेरस के दिन मन्दिर अवश्य जाती हैं जहाँ पर कीर्तन आदि का आयोजन होता है। 'स्त्री पक्ष' की वृंदा शान्ति और पवित्रता के लिए मदर टेरेसा के आश्रम में चली जाना चाहती है।

'अपने–अपने चेहरे' की मिसेज गोयनका मंगलवार का व्रत करती हैं और उस दिन ढेर सारे घी में तले आलू का पारण करती है। सोमावती अमावस्या के दिन सोमा की सास ब्राह्मण भोज करती है। मिसेज गोयनका की बेटी रीतू का वैवाहिक जीवन दूसरी स्त्री के कारण टूट जाता है और वह घर लौट आती है। जब मि. गोयनका एवं मिसेज गोयनका रीतू से दूसरी शादी करने को कहते हैं तो रीतू के मन में व्याप्त अन्धविश्वास से हमारा परिचय होता है। रीतू कहती है– ''मम्मी मुझे कुछ समय चाहिए। अभी मेरे साढ़े साती की दशा है इसलिए मेरा समय ठीक नहीं चल रहा है। कुछ दिन बाद सब ठीक हो जाएगा।''[10]

प्रभा खेतान ने 'पीली आँधी' में मारवाड़ी परिवार में रजोधर्म को लेकर व्याप्त अन्धविश्वासों को उजागर किया है। रूंगटा परिवार में पीरियड्स आने पर औरतों को अछूत मानकर कुछ दिन के लिए अलग कर दिया जाता है। उन लोगों का कहना था कि ऐसे वक्त में उस महिला के अन्दर बुराईयों को जन्म देने वाली शक्तियों का बोलबाला होता है। प्रभा खेतान ने मारवाड़ी समाज के ऐसे कुरीतियों को व्यक्त करते हुए लिखती हैं– ''जोत डालते समय, पापड़ उसनते समय यह ख्याल रखा जाता है कि किसी को 'पीरियड' है तो वह बिलकुल दूर रहे। पापड़ उसनते समय यदि उस औरत की छाया भी पड़ गई तो बाद में पापड़ लाल हो जाएँगे। उनमें बूफन लग जाएँगी।''[11]

ऐसे ही वाकये को प्रभा खेतान 'स्त्री पक्ष' उपन्यास में भी करती हैं। उपन्यास की नायिका वृंदा जब ऐसे समय में रहती है तो उसकी माँ उसे हिदायत देते हुए कहती हैं कि इन दिनों जब शरीर चूने लगे तब अचार–पापड़ नहीं छूना चाहिए, क्योंकि औरत के शरीर से एक ऐसी गैस निकलती है जिसके कारण अचार–पापड़ में बूफन लग जाता है।

उपर्युक्त प्रसंगों के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्पष्ट किया है कि भारतीय धर्मभीरु लोग अंधविश्वास से घिरे होने के कारण ऐसा करते हैं। ऐसा नहीं है कि प्रभा जी धर्म के विरुद्ध हैं लेकिन उनका मानना है कि धर्म की आड़ लेकर स्त्रियों का शोषण करना उचित नहीं है। उनका कहना है कि जिन–जिन धार्मिक समस्याओं से स्त्रियाँ संघर्ष कर रही हैं, वास्तव में उनको होना ही नहीं चाहिए तभी समाज की स्त्रियाँ अपना आत्मविकास एवं उन्नति कर सकती हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. प्रभा खेतान, अग्निसंभवा, हंस–अप्रैल, 1992, दूसरी किस्त, पृ. 55
2. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृ. 152
3. अर्चना वर्मा, अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, पृ. 184
4. प्रभा खेतान, बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ, पृ. 115
5. प्रभा खेतान, आओ पेपे घर चलें, पृ. 91
6. प्रभा खेतान, अग्निसंभवा, हंस–अप्रैल, 1992, दूसरी किस्त, पृ. 53
7. प्रभा खेतान, अपने अपने चेहरे, प्रभा खेतान, पृ. 54
8. प्रभा खेतान, तालाबन्दी, पृ. 69
9. प्रभा खेतान, छिन्नमस्ता, पृ. 30
10. प्रभा खेतान, अपने–अपने चेहरे, पृ. 183
11. प्रभा खेतान, पीली आँधी, पृ. 202